राधास्वामी संत संदेश

मासिक समाचार पत्रिका

वर्ष : 8 अंक : 101 15 सितम्बर 2005

सदस्यता शुल्क :

वार्षिक : रुपए 40/-

भारत व नेपाल में

एक प्रतिः रुपए 5/-

इस अंक में

1. बड़े महाराज संत ताराचन्द जी द्वारा फर्माया सत्संग 2
2. मरना क्या है (शिवव्रतलाल जी) 25
3. अनमोल वचन व ज्ञान सार 26
4. सत्संग भावांश 27
5. ध्यानाकर्षण बिन्दू 29
6. सतगुरु कृपा 30
7. सेवादारों के लिए सूचना 32

राजीव कुमार लोहिया, मुद्रक एवं प्रकाशक द्वारा अपने स्वामित्व में राधास्वामी सत्संग प्रेस हालू बाजार, भिवानी से मुद्रित तथा कार्यालय, हालू बाजार, भिवानी से प्रकाशित

फोन नं. : 01664-241570 (भिवानी आश्रम)
01664-265094 (दिनोद आश्रम)

वेबसाइटः- www.radhaswamidinod.org

इ-मेलः- info@radhaswamidinod.org

भिवानी : कैसेट क्रमांक : 112

दिनांक : 6 जून, 1993

समय : प्रातः

राधास्वामी! राधास्वामी दयाल की दया!!
राधास्वामी सहाय!!! राधास्वामी!

प्रेमियो, सत्संगियो, माताओ और बहनों ! आज एक जीता जागता चिराग राधास्वामी मत ही है। पर इसमें भी काफी सो गए हैं। कैसे सो गए हैं? कोई तो सतलोक से आगे का पता नहीं देता है। कोई राधास्वामी धाम का पता नहीं देता है, तो कोई पांच धुनियों का पता नहीं देता है। कोई सीधा राधास्वामी नाम ही बता देता है। न वह स्थान बताता है और न हीं मंजिल बताता है। कई–कई ऐसे हो गए हैं जो इसमें से न्यारे हुए हैं, वे कुछ भी नहीं बताते हैं। वर्णात्मक नाम बता देते हैं और कह देते हैं कि तू मेरा चेला बन गया है। अब तू मजे मार। अगर कोई ज्यादा कुछ कहे तो वे स्वामी जी महाराज की साख सुना देते हैं। स्वामी जी महाराज ने लिखा है–

तेरी चिंता मैं मन धारी, तू निश्चिंत रह प्यारी।

ये बातें भी काफी लोग सुना देते हैं। कहते हैं कि तू डर मत। कबीर साहब ने भी लिखा है कि एक बार मेरी शरण में आ जाओ मेरे शब्द को पकड़ लो फिर मैं अपने आप ही ले जाऊंगा। कुछ भी करने की जरूरत नहीं है। पर कबीर साहब ने जो कही हैं, उन बातों को तो वे बेचारे समझे ही नहीं हैं। क्या करें? उनको नाम तो मिल गया पर उनका सुमरन भजन करना तो बंद है। सुमरन

भजन किसका करोगे?

ये तो गलत बातें हैं कि परमात्मा के हम अंदर ही तो रहते हैं या परमात्मा हमारे चारों तरफ ही है। फिर हमें सुमरन भजन भी किसका करना है? आप यह न सोच लेना कि आप पहले को तो बता रहे थे कि किसी की निंदा न करना। पर आप खुद निंदा करते हो। नहीं मैं निंदा नहीं करता हूं। मेरी जुबान से निंदा मेरे सत्संग में कभी भी नहीं आएगी मेरी जुबान से। क्योंकि मैं एक परमसंत का बेटा हूं। उन्होंने यह जरूर कहा था कि सच्ची बातें कहने का कोई दोष नहीं। मैं कभी भी निंदा नहीं करूंगा। क्योंकि निंदा तो न कभी स्वामी जी ने की, न हजुर महाराज जी ने और न महाराज शिवव्रतलाल ने की और न मेरे गुरु महाराज जी ने कभी की। फिर मैं क्यों करूंगा? निंदा तो वही करते हैं, जिन्हें निंदा करने की आदत पड़ जाती है। मैं कह रहा था कि नाम के बारे में कह देते हैं कि मैं आकर ले जाऊंगा। मैंने कबीर साहब की वाणी किसी से सुनी थी। उनका 'अनुराग–सागर' था या 'बोध–सागर'। उसमें कबीर और काल महाराज की बातें जो हुई वे दी गई हैं। काल महाराज उनको कहता हैं कि मैं छोडूंगा नहीं सभी को ले जाऊंगा। कबीर साहब ने कहा–नहीं। वे कहते हैं कि कबीर साहब ने उसकी जीभ पकड़ ली और दांत तोड़ दिए। काल महाराज की बहुत बेइज्जती की। उसने कह दिया कि मैं तेरे जीवों को हाथ नहीं लगाऊंगा। पर जो तेरी लाइन को नहीं जानते हैं और तेरे शब्द को नहीं पकड़ते हैं तो उनको? कबीर साहब ने कहा कि वे तो तेरे ही हैं। काल महाराज ने कहा कि फिर तो मैं उन बच्चूओं को छोडूगा ही नहीं। नाम तो कबीर साहब का लेते हैं पर उनको न तो कबीर साहब के दस प्रकार के शब्दों का पता है और न ही उन्हें उनकी मंजिलों का पता है और न ही वे काल से आगे गए हैं। फिर उनका क्या हाल होगा? कबीर साहब ने कहा कि वे

तो तेरे ही हैं। पर जिन्हें मेरे शब्द का पता लग गया। उनके बारें में क्या करोगे? काल महाराज ने कहा कि उनको मैं अपने कन्धे पर बिठा करके पार उतार दूँगा। सारी ज्यों की त्यों तो मुझे बातें याद नहीं है। इन्हें सुने कई वर्ष हो गए हैं। आज मुझे ये बातें याद आ गई। यही स्वामी जी महाराज की बातें हैं। स्वामी जी ने भी यही कहा है। यह शब्द कई बार गाया भी करते हो। राधस्वामी वाले कह देते हैं कि तुम हमारी शरण में आ जाओ। सब तिर जाओगे। शरण में आने वाला तो तिर जाएगा। पर नाम लेने वाला नहीं तिरेगा। सोचो ! यह मत सोचना कि नाम लेना बुरा है। नाम लोगे तभी तो शरण में आओगे। पर शरण में आने की बात ही और है। शरण में तो मीराबाई गई थी। वह रैदास की शरण में गई थी। उसने जाति–पाति का ख्याल नहीं किया। शरण में तो सहजोबाई गई थी। उसने सारे ही विचार छोड़ दिए। उसका भाई ही उसका गुरु था। शरण में तो हजूर महाराज गए थे। सारे हिन्दुस्तान के पोस्ट मास्टर जनरल थे। फिर भी उन्होंने कोई ख्याल नहीं किया। आपने उनकी वह बात सुनी होगी–जब वे आगरा में कुएं पर से पानी लाने के लिए गए थे तो उनको कुएं वालों ने दो तीन थप्पड़ मारे। उनका घड़ा फोड़ दिया। ये बातें मेरे साथ भी बीती थी। मुझे भी गांव वालों ने पानी नहीं भरने दिया था। उन्होंने मेरा पानी भरना बन्द कर दिया था। उन्होंने कह दिया था तेरे पास तो हरिजन बैठते हैं और तू हरिजनों को ही साथ रखता है। मंदिर में घड़ा भरा था मेरा वह घड़ा फोड़ दिया था। मैं तो अपने घर पर ही बैठ गया और अपनी कुटिया में ही रहा। आठ दिन के बाद मेरे ईष्ट ने कहा कि घबरा मत। तेरा सारा ही काम बन जाएगा। उसके बाद मैंने घड़ा नहीं उठाया। थोड़े दिन के बाद ही एक कुआं बना लिया। वहां खारा पानी था पर जब कुआं बनाया तो मीठा पानी निकल आया। कुआं बना, फिर छोटा सा आश्रम बन गया।

फिर दूसरी और जगह ली गई। वहां बड़ा आश्रम बन गया। इंसान क्या कुछ नहीं कर सकता है? हिम्मत रखनी चाहिए। सतगुरु का सहारा रखना चाहिए। जो सतगुरु का सहारा छोड़ देता है वह जीव गिर जाता है। चाहे उसमें कितना ही बल हो। आपने सुना होगा–

गुरु बढ़ाए सब बढ़े, बलकर बढ़ा न कोय।
बलकर हिरणाकुश रावण बड़े, जड़ा मूल से दिए खोय।।

जो बढ़ते हैं वे तो गुरु के बढ़ाए ही बढ़ते है। मैं हजूर महाराज जी की बातें कह रहा था। उनको पीटा और उनका घड़ा भी तोड़ दिया। वे स्वामी जी महाराज के पास आए। एक तहसीलदार था। उसने कहा कि हम यूं कर देंगे और यूं कर देंगे। स्वामी जी ने कहा–क्या बात है? हजूर महाराज ने कहा कि हमारा घड़ा तोड़ दिया और मुझे पीटा भी। वे चार पांच आदमी थे। स्वामी जी ने कहा–अगर तुम उनके कुएं पर जाओगे तो वे मारेंगे ही। हजूर महाराज ने कहा–हमारा कसूर तो नहीं था। कसूर तो उन्हीं का था। स्वामी जी ने कहा कि नहीं, तुम्हारा कसूर है। जाओ, माफी मांग कर आओ। सारे हिन्दुस्तान के पोस्ट मास्टर जनरल थे। इसे कहते हैं शरण लेना। एक तहसीलदार के साथ उनको कह दिया कि जाओ माफी मांग कर आओ। स्वामी जी ने उनको चार रुपये दे दिये और कह दिया कि उनको ये चार रुपये भी दे देना। वे कह रहे थे कि तुम्हारा स्वामी जी दुनिया को प्रसाद बांटता है। हमें नहीं देता। उनको कहना इन रुपयों का प्रसाद खा लेना।

इसे कहते हैं कि बड़े आदमी बड़े ही काम करते हैं। गुरु के कहने से ही तो चले गए। मान, बड़ाई और इज्जत तो उनकी भी होगी। पर गुरु महाराज जो भी कहते हैं वे कुएं में डालने की बातें नहीं कहते। वे तो अपने शिष्य को तारने की बातें कहते हैं। उनके पास वे गए। जाकर बंदगी की और कहा कि माफी दे दो। वही तो

पिटने वाले थे और वही माफी मांगने चले गए। यह बात तो अचरज की थी। उन्होंने यह भी कह दिया कि ये चार रुपये स्वामी जी ने दिए हैं इन्हें ले लो। स्वामी जी ने कहा है इनकी मिठाई खा लेना। वे माफी मांग करके आ गये। जब शाम का सत्संग हो रहा था, उस समय वे भी पहुंच गए वहां पर। उन्होंने बंदगी की और कहा–महाराज जी ! वह कुआं आपका है। हमारी गलती हो गई। आप पानी भरा करो। स्वामी जी ने कहा–नहीं, अब हम अपने ही कुएं का पानी पीएंगे। तुम्हारे कुएं का पानी नहीं पीएंगे, क्योंकि हमारे पिछले जन्म का एक कुआं है वह मुझे याद आ गया है। हम सुबह ही सारी संगत इकट्ठी होकर उसे निकाल लेंगे। वे सारी संगत को सुबह ही वहां ले गए। जो स्वामी बाग में कुआं बना है, इसे 'स्वामी सागर' बोलते हैं। वहां दो दिन में, रात दिन लग कर उसको निकाल लिया। वहां बना बनाया कुआं था। स्वामी जी ने कहा–यह मेरे पिछले जन्म का कुआं है। इसे संभालो। वहां कुआं खोदा तो कहते हैं कि पानी निकल आया। स्वामी जी ने तीन कुर्ल्ले भर कर वापिस कुंवे में ही डाल दिए। संगत ने पूछा–आपने यह क्या किया? स्वामी जी ने कहा–हमने इस के जल का प्रसाद बना दिया है। अगर गंगाजल बिगड़ेगा तो यह पानी बिगड़ेगा। दुनिया यहां से ले जाया करेगी। उन्होंने उस पानी का अम त बना दिया।

मैं बात कह रहा था कि स्वामी जी का यही कहना था कि वही तिरेगा। जो स्वार्थी हैं और जो अपने विचारों को गंदे रखते हैं, स्वार्थ में ही और काम कर लेते हैं वे क्या तिरेंगे? वह वाणी स्वामी जी महाराज की जरूर थी, वह अब भी है। उस पूरी वाणी को कोई नहीं लेता है।

मैं आपको स्वामी जी की और कबीर जी की बातें ही, जो एक समान हैं, बताता हूं। उन्होंने कहा कि जाओ, अपना भजन करो।

स्वामी जी ने इस वाणी में कहा है–

देख प्यारे मैं समझाऊं, रूप हमारा न्यारा।
वह तो रूप लखे नहीं कोई जब तक देऊं न सहारा।।

इस वाणी से ये गुरुडम वाले रोजगार का काम लेते हैं। वे पहली कड़ी को छोड़ ही देते हैं। पहली कड़ी स्वामी जी की यह है–

करणी करो मार मन डारो, इन्द्री रोक द्वारा।

अब कोई बात खाली तो नहीं रही है। करणी करो, करणी कोई चोरी और बदमाशी को तो नहीं कहते हैं। करणी तो पवित्र होती है। उन्होंने यही कहा है कि करणी करो मार मन डारो। मन जब काबू में आ जाता है तो नानक साहब कहते हैं–

नानक मन जीता जुग जीता।

कबीर साहब भी यही कहते हैं–

कहें कबीर मन मानिया। मन मानिया तो हरि जानिया।।

वे उसे परमात्मा तूल्य ही मानते हैं। इसीलिए महात्मा कहते हैं–

साधो मन है बड़ा जालिम।
जिसका पड़ा वास्ता मन से उसी को है मालम।।

इस मन ने तो बड़े–बड़ों की, श्रंगी ऋषि जैसों की भंगी बना दी। पारासर और नारद जैसों की क्या हालत की? यह मन बड़ा जालिम है। वह बड़ा भागी है जिसने मन पर कब्जा कर लिया है। सो स्वामी जी ने कहा है–

करणी करो, मार मन डालो।

दोनों बातें ठीक हो गई। फिर कहते हैं–इन्द्री रोक द्वारा। अब बताओ क्या बाकी रह गया? हमारी तीन इन्द्रियों के तीन बंद लगते हैं। सब से बड़ी इन्द्रियां हैं ये तीनों। इन तीनों के बांधे बिना न कोई अपने घर गया है और न जा सकता है। कबीर साहब भी कहते हैं–

आंख, कान, मुख बंद कराओ, तब देखो गुलजारा है।
कर नैनों दीदार महल में प्यारा है।।

नानक साहब भी कहते हैं–

तीनों बंद लगाय के, सुनो अनहद टंकोर।
नानक सुन्न समाध में, नहीं सांझ नहीं भोर।।

इस बारें में कितनी वाणी कहूं? इस के बारे में बहुत महात्माओं ने कही हैं। पर हम उन महात्माओं की वाणियों को याद नहीं करते। शिव जी भी शिव पुराण में कहते हैं–पावर्ती ! जो सुबह–सुबह ब्रह्म मुहूर्त में उठकर तीनों बंद लगाकर दसवें प्रकार के शब्द को सुनते हैं जिससे नौ शब्द पैदा हुए हैं, उस शब्द की जो भी धुनि सुनता है वह अपने घर चला जाता है। यह हमारा अभ्यास है। स्वामी जी ने इन सभी का इस शब्द द्वारा एक ही बंधन कर दिया–

करणी करो, मार मन डारो, इन्द्री रोक द्वारा।

यह काम तो हम नहीं कर सकते हैं। क्योंकि अगर कोई भी करता है तो इसमें तो जोर पड़ता है। जिस गुरु ने ये काम खुद ने ही नहीं किए हैं तो वह तुम्हें कैसे पार उतार सकता है? वह तो धोखा है। अगर तुम उसकी किसी और ही बात को देखकर उसके जाल में फंस गए तो तुम अपना अकाज कर लोगे। सतगुरु के बारे में मैंने एक कड़ी में सारा ही बता दिया। यह कड़ी जिसमें मिल जाती है, उस सतगुरु से तुम्हारा भला ही भला है। जिसमें ये बातें नहीं मिलती हैं तुम उसके साथ कितने ही चले जाओ, उसमें तो अकाज ही अकाज है। हीजड़े के साथ शादी करवा कर लड़की लाल नहीं खिला सकती है। जिसमें ये गुण नहीं हैं उसे मैं भक्ति की तरफ से तो हीजड़ा कहता हूं। मेरी बात का गिला न करना, मुझे ऐसा ही बोलना आता है। वह हीजड़ा इसी कारण से है कि वह भक्ति से खाली है। वह संसार का रखवाला है। संसार की

बातों का तो पक्का है पर भक्ति से खाली है। वे कहते भी यही हैं कि घबराओं मत ! स्वामी जी ने यह बात कही है–

ये करणी मैं आप कराऊं और पहुंचाऊं धुर दरबारा।
देख प्यारे मैं समझाऊं, रूप हमारा न्यारा।।

वे कहते हैं कि करणी तो मैं अपने आप ही करवा लूंगा।

वह तो रूप दिखा कर छोडू, तुम जल्दी क्यों करो पुकारा।
तेरी चिन्ता मैं मन धारी, तू निश्चिंत रह प्यारा।।

वे कहते हैं कि बावले ! घबराता क्यों हैं? तेरी चिन्ता तो गुरु को है। मैं तेरा गुरु हूं। मुझे है तुम्हारी चिन्ता। तू निश्चिंत रह, प्यारा। मैं आप ही ले जाऊंगा। कहते हैं–

अब का जग मीठा, अगला किन दीठया।

हजूर महाराज और स्वामी जी के प्रश्न–उत्तर रूप में शब्द हैं। अब इन शब्दों की एक भी कड़ी को लेकर यदि चल पड़ते हो, तो जीवन सफल हो जाएगा। मैंने यह भी बता दिया है कि यह एक कड़ी जिस भी संत पर घटित होती है, वह संत तो सारी दुनिया का कर्ता है। उसको परम संत कहो।

एक संत होता है और एक परम संत होता है। एक हंस होता है, एक परम हंस होता है। एक साधु होता है और एक भेषी टेकी होता है। ये न्यारी–२ मंजिलें हैं। अब मैं सारी बातें बताता हूं। आप लोग अचंभे में पड़ जाओगे। मैं गलत बातें तो कभी भी नहीं कहूंगा? शास्त्रों से मिली हुई बातें कहता हूं। कबीर साहब ने बहुतों को नाम दिया था पर जो वस्तु धर्मदास को दी थी, वह वस्तु किसी को भी नहीं दी। स्वामी जी महाराज के भी अनेक शिष्य थे। हजूर महाराज जी को जो वरदान और वचन दिया वह किसी को भी नहीं दिया। आप कहोगे–आप यह क्या कहते हो? मैं इन दोनों का मेल मिलाता हूं। हजूर महाराज की बातें मैंने कबीर साहब की साखियों में बता दी हैं। कबीर साहब ने कहा कि मेरे शब्द को जो

समझ जाएगा, उसको जैसा कि काल महाराज ने कहा–मैं कंधे पर बिठाकर पार पहुंचा दूंगा। उस शब्द का समझने का क्या अर्थ है? इसका अर्थ इन 18 मंजिलों को समझना है। आजकल के गुरु जो काल महाराज के बनाए हुए हैं वे इन बातों को समझ नहीं सकते हैं। उनके आडम्बर तो बहुत बड़े–बड़े हैं। फिर वे शब्द का वर्णन करते समय चूक जाते हैं। शब्द के बिना हम पहुंच नहीं सकते हैं क्योंकि–

शब्द बिना सुरत आंधरी, कहो कहां को जाय।
द्वार न पावे शब्द का, फिर-फिर भटका खाय।।

फिर–फिर भटका खाने का मतलब है कि उस सुरत का लख चौरासी का चक्कर कट नहीं सकता है। सो कबीर साहब ने जो शब्द बताया, वह यही है। मैंने पहले भी बताया था कि वह 'सोहम्' शब्द नहीं है। 'सोहम्' तो काल के देश का शब्द है। कबीर साहब ने वह असली शब्द धर्मदास को बताया था। कबीर साहब की यह साख भी मिलती है–

धर्मदास तोहे लाख दुहाई। सार भेद बाहर न जाई।।

स्वामी जी महाराज ने वही भेद हजूर महाराज जी को बताया। उन्होंने यह कह कर बताया कि सालिगराम! कोई नई चीज प्रगट करके ला। अब ! वे तो गुरुमुख थे। उन्होंने ऐसा और तो किसी को भी नहीं कहा। उन्होंने यह बात उनको कब कही? ये बातें उन्होंने तभी कही थी, जब पहले तो ये कहा था कि आज मौज बख्शी जाएगी। उन्होंने बाबा जैमल को भी बुला लिया और कई कहते हैं कि बग्गा सिंह भी था। कोई कहते हैं कि हजूर महाराज भी थे। किसी ने पन्नी गली को भी देखा होगा। जब छत के ऊपर से तीन चिलमें लेकर चले तो वे जीने में रूक गए। हजूर महाराज ने तो ऊपर से ही छलांग लगा दी। वे आंगन में आ गिरे। स्वामी जी ने पूछा–सालिगराम ! क्या चोट लग गई? उन्होंने

कहा–हां, चोट लग गई। जब मुझे लगी थी इसी कारण से तो ऊपर से छलांग लगाई थी। ऐसा न हो कि कोई दूसरा ही मौज को ले जाए। स्वामी जी ने कहा–वाह ! धन्य हो। अब स्वामी जी ने उनको कहा–सालिगराम ! अब एक हफ्ते तक मेरे पास कोई भी नहीं आएगा। आना जाना बंद रहेगा। मेरे दर्शन के लिए कोई भी नहीं आयेगा। तुम सालिगराम न बनना। कई–कई को मैं कहता हूं कि तुम क्यों इतने जल्दी आते हो, वे फिर आ जाते हैं। वे अगर सालिगराम बनना चाहते हों तो ऐसे तो सालिगराम नहीं बनते हैं। सालिगराम बनना चाहते हो तो मैं बता दूंगा। सभी ने कहा कि ठीक है। नहीं आएंगे। अब स्वामी जी के पास और तो कोई भी नहीं गया। सालिगराम जी जंगले के अन्दर से दर्शन करने लगे। स्वामी जी ने उनको खड़ाऊं मारी। उन्होंने कहा कि तू बिना ही इजाजत दर्शन करने के लिए क्यों आया है? जब उनको खड़ाऊं मारी तो उनको खून निकल आया। स्वामी जी ने उनके सिर के ऊपर हाथ रख दिया। अब वह तो उनका प्यारा शिष्य था। जब उन्होंने हाथ रखा तो हजूर महाराज ने शब्द बनाया।

गुरु धरा शीष पर हाथ मन क्यों फिक्र करे।
गुरु से काल भी डरे, और गुरु तेरी पल-पल रक्षा करे।।

सालिगराम जी ने कहा–महाराज जी ! आप एक खड़ाऊं रोज मार लिया करो। पर एक बार दर्शन कर लेने दिया करो। स्वामी जी ने कहा–सालिगराम! मेरे पास कोई नई चीज लेकर आना। यहां से तुम निकल जाओ। नई चीज लेकर आओगे। वे दूसरे ही दिन आ खड़े हुए। उन्होंने कहा कि हजूर ! मैं नई चीज ले आया हूं। स्वामी जी ने पूछा कि नई चीज क्या लाया है? सालिगराम जी ने कहा कि आप तो कहते हो कि वहां साहब स्वामी है, आप वहां सतनाम अनामी की धुनि भी बताते हो। पर वहां तो ये नहीं हैं। वहां तो राधास्वामी की ही धुनि होती है। मैं

कोई गलत बातें नहीं कहता हूं। लेख मिलता है तभी बताता हूं। उन्होंने सालिगराम को छाती से लगा लिया। वाह ! सालिगराम तुम्हें धन्य है। सो ही सार वचन में स्वामी जी ने कहा–

गुरुमुख हो सो आगे पंथ चलावै।

वह सालिगराम, गुरुमुख था। उन्होंने उसको छाती से लगा कर कहा कि मैं इस नाम को प्रगट करने के लिए दो बार आ चुका हूं। कबीर साहब जैसे गुमास्ते भी भेजे। सभी एक–एक दोहा कहकर चले गए। अब मैं भी यही नाम प्रगट करने के लिए आया था। पर मैं तो साहेब स्वामी ही बता सका। राधास्वामी को प्रगट नहीं कर सका। तुझे धन्य है कि तूने राधास्वामी नाम को प्रगट कर दिया है। यह वह नाम है चारों युगों का, जो स ष्टि से पहले भी था, अब भी है और पीछे भी रहेगा। इसमें भी कोई एतराज करना चाहता है तो बोल सकता है। वह स ष्टि के बाद में कैसे रहेगा? राधास्वामी किसे कहते हैं? राधा नाम सुरत का है और स्वामी नाम शब्द का है। सो यह राधास्वामी नाम सारी ही दुनिया का कर्ता है। यही नाम है। यह गुरु और गुरुमुख का जोड़ा था। पर यह भी बता देता हूं कि स्वामी जी महाराज के शिष्य तो दो ही संत माने जाते हैं। बाबा जैमल सिंह और हजूर महाराज। गरीब साहब की बात भी थोड़ी आती है। वे पहले किसी गिरी या पुरी के सत्संगी थे। भारा सिंह और विंध्याचल तो मनमर्जी के संत थे। इनको नाम का आर्डर स्वामी जी ने नहीं दिया। इन्होंने तो अपनी मर्जी का नाम ही बनाया और उनके वे पंथ ढीले पड़ गए। स्वामी जी महाराज ने तो हजूर महाराज जी को ही आर्डर दिया था। यह मुझे लेख ब्यास से मिला है। तभी मैंने कहा है। स्वामी जी महाराज जी ने हजूर महाराज को आर्डर दिया था। जैमल सिंह जी को तो माता जी ने आर्डर दिया था। स्वामी जी महाराज ने तो एक सिर्फ हजूर महाराज जी को ही कहा था कि नामदान दे। राधास्वामी नाम का

उनका उपदेश था। अब इसीलिए कहते हैं–

राधास्वामी गाय के, जन्म सफल कर ले।
यही नाम निज नाम है, मन अपने धर ले।।

यह निज नाम कुल मालिक का है। इसकी महिमा भी कितनी है–

बैठक स्वामी अद्भुती, राधा निरख निहार।
और न कोई लख सके, शोभा अगम अपार।।

अर्थात् स्वामी जी की बैठक इतनी अद्भुत है कि उसको केवल सुरत ही निहार सकती है। वह स्वामी शब्द ही है। उस शब्द की महिमा का वर्णन कौन कर सकता है? बल्कि नानक साहब जैसे संतों ने आखिर यह कह दिया–

शब्द ही धरती, शब्द ही आकाश।
शब्द ही शब्द भया प्रकाश।।
सगली स ष्टि शब्द के पाछे।
नानक शब्द घटे, घट आछे।।

पलटू जी ने भी सारा सब कुछ ही बता दिया है। पर स्वामी जी ने जो कहा है–

बैठक स्वामी अद्भुती, राधा निरख निहार।

अर्थात् आत्मा ही उस स्वामी जी की बैठक को निहार सकती है। आगे कहते हैं–

गुप्त रूप जहं धारिया राधास्वामी नाम।
बिना मेहर पावे नहीं जहां कोई विश्राम।।

अर्थात् वहां बिना मेहर के कोई विश्राम नहीं कर सकता है। यह स्वामी जी की वाणी कहता हूं। यह नाम बिना मेहर के नहीं मिलता है। कई लोग चकरा जाते हैं। यह राधास्वामी नाम मेहर से ही मिलता है। यह ऊंचे से ऊंचा नाम है। यह कुल मालिक का नाम है। यही नाम कबीर साहब ने भी प्रगट किया था। अगर कोई

भी एतराज करना चाहता है तो बेधड़क होकर करो। मैं तो प्रमाण के साथ बातें किया करता हूं। स्वामी जी महाराज ने सालिगराम जी को एक बात बताई थी जब उन्होंने राधास्वामी नाम प्रगट किया था। उन्होंने कहा था कि वाह ! सालिगराम ! यह नाम तो मैं प्रगट करने के लिए आया था। पर गुरुमुख हो सो आगे पंथ चलावे।

उनके एक और शिष्य थे पदम साहब उन्होंने भी यह बात कही कि मेरे भाई सालिगराम के जो दर्शन कर ले, उस के कोटि जन्मों के पाप कट जाएं। यह गुरुमुख है। अगर कोई इनसे बातें कर लेगा तो उसका परिवार भी लख चौरासी में नहीं आएगा। उन्होंने भी उनकी गुरुमुखता के कारण ही बड़ाई की है। मैं ये सारी बातें तो जानता भी नहीं हूं। सारी बातें मुझे याद भी नहीं। उन्होंने उनकी बड़ी भारी बड़ाई की है। पर राधास्वामी मत वालों ने पदम साहेब को भी ठुकरा दिया क्योंकि उन्होंने राधास्वामी नाम के आगे पदम लगा दिया था। वहां राधास्वामी नाम का उपदेश होगा। यह पता नहीं है। पर उन्होंने और ही कुछ बना दिया। इसीलिये इन लोगों में कमी आ जाती है। अब आप कहोगे कि कबीर साहब की बातें तो रह ही गई हैं। मैं अब उनको भी मिलाता हूं। कबीर साहब ने भी यही कहा है–

तेरे घट के अंदर नूर बाहर क्यों भटके भाई।
पांचों ऊपर बंध लगा ले और पच्चीसों मोड़।।
मन लगाम सुरत घर डाटो, प्रीत जगत से तोड़।।

क्या इस कड़ी में और स्वामी जी की कड़ी में कोई भेद है? बात वही एक ही है। गाने का ढंग ही न्यारा है। कड़ी का भाव एक ही है। अब आप बताओ–कबीर साहब ने कितनी कष्ट की बातें कहीं हैं।

पांचों ऊपर बंध लगा ले।

अर्थात् काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार इन पांचों पर बंध लगा ले। **और पच्चीसों मोड़**, अपनी पच्चीस प्रक तियों को भी उल्टी मोड़ ले। मन लगाम यानि मन को लगाम डाल लो।

सुरत घट डाटो, प्रीत जगत से तोड़।।

फिर सुरत को निशाने पर डाटो। प्रीत जगत से तोड़। जो जगत से प्रीत तोड़ देता है, उसका जीवन सफल हो जाता है।

कई बार मैंने आप लोगों को लखमा माली और पूल्ही भक्तिनी की मिसालें दी हैं। दोनों की एक ही मिसाल मिलती है। संतों की एक ही बात होती है। कबीर और स्वामी जी की एक ही बात मिल गई है। इस बात को लें तो दोनों की ही बातों में बड़ी भारी कठोरता है। जब इस तरह से इन इंद्रियों को काबू नहीं करेगा तो वह कभी भी अपने घर नहीं जा सकता है। दो ही मार्ग हैं उस घर में पहुंचने के। या तो सतगुरु के इतने प्यारे बन जाओ कि अपने आपको भूल जाओ या सतगुरु के नहीं बन सकते तो जो सतगुरु नाम बताता है उसका रगड़ा लगाओ। सो यह काम करो। काम करोगे तो फिर भी काम कर जाओगे। सतगुरु को प्रगट कर लो, अंतर में।

मैं कई बार कहा करता हूं कि यही दो रास्ते हैं कि या तो बिल्ली का बच्चा बन जाओ या बंदर का बच्चा बन जाओ। अगर बिल्ली का बच्चा बनोगे तो बिल्ली आप ही उसकी रक्षा करती है। वह चल नहीं सकता है। बिल्ली अपने बच्चे को मुंह में लेकर चलती है और आगे से कोई कुत्ता आ जाता है तो वह अपने बच्चे को दांत भी गड़ने नहीं देती है और झपट्टी मार कर अपने बच्चे को बचा कर ले जाती है। वह उसको मरने नहीं देती है। सो ही तुम अगर बिल्ली के बच्चे की तरह से सतगुरु के बन गए उसकी शरण में जाकर के तो सतगुरु अपने आप ही काल माया से बचा

लेगा। जैसे जोगा सिंह को बचाया था गुरु अर्जुन सिंह ने। इसी प्रकार से बच जाता है। स्वामी जी महाराज ने हजूर महाराज को बचा लिया था। आपने यह मिसाल भी सुनी होगी। आते हुए उनका मन चलायमान हो गया। उनके घर के पास पन्नी नाम की रंडी थी और दूसरी रंडियां भी थीं। उनमें उनका मन चला गया। वह पन्नी के कमरे में चला गया। पन्नी ने सोचा कि आज तो बड़ा भाग्य उदय हुआ कि एक गुरुमुख आ गया है। लंबी बातें नहीं कहता हूं। जब वे अंदर गए तो वहां स्वामी जी का रूप प्रगट हो गया। जब रूप प्रगट हुआ तो हजूर महाराज ने मत्था टेक दिया और झटपट बाहर आ गए। उनके दरबार में आकर उनके चरणों में गिरे और रो पड़े। स्वामी जी ने कहा–क्यों सालिगराम ! क्या बात हुई? उन्होंने कहा–महाराज जी ! मुझे तो गिरने से बचा लिया। स्वामी जी ने कहा–नहीं, यह खेल तो करना ही था। क्योंकि गुरुमुख के दर्शन के बिना किसी का भी उद्धार नहीं होता है। मैं तुम्हें गिरने नहीं देता। पर उस पन्नी रंडी का तो उद्धार करना था।

मैंने तो तुम्हें उसके उद्धार के लिए ही उसके घर पर भेजा था। ताकि वह दर्शन कर ले और उसका बेड़ा पार हो जाए। हजूर महाराज जी ने कहा है–महाराज जी ! यह काम आपने क्यों किया? स्वामी जी ने कहा–वह तो पिछले जन्म की साथिन थी। जब कबीर साहब और रैदास जी आए थे, उस वक्त कबीर साहब ने उसका हाथ पकड़ा था। वह तो कबीर साहब की अपनाई हुई रूह थी। वह तो उतारनी ही पड़ी मुझे। अब ये रंडियां नहीं रहेंगी और इनका सबका ही बेड़ा पार हो जाएगा। सो थोड़े ही दिन में उन सब का खात्मा हो गया। वह महात्माओं की गली बन गई।

पिछले जन्म की बातें बताता हूं कि कबीर साहब की अपनायी हुई वे रूह, स्वामी जी ने तारी। तुलसी साहब की भी अपनायी हुई

रूह स्वामी जी ने तारी। उन्होंने गिरधारीदास का उद्धार किया था। सो संत जीवों का उद्धार करने के लिए आते हैं।

सो स्वामी जी महाराज ने एक ही को नाम दान का आर्डर दिया था। एक ही को सारी शक्ति सौंपी थी। आप भी प्रश्न कर सकते हो–क्या जो अब ब्यास में नाम देते हैं वे स्वामी जी के आर्डर से देते हैं? नहीं, ये स्वामी जी के आर्डर से नहीं देते हैं। इसका मेरे पास लेख है। ऐसा तो जैमल सिंह जी को माता जी ने आर्डर दिया था कि जाओ जैमल सिंह ! पंजाब में तुम नाम दिया करो। तेरी यह ड्यूटी है। हजूर महाराज को तो स्वामी जी ने आर्डर दिया था। अगर इस लेख की पुष्टि करना चाहते हो तो उनके आखरी वचनों को देखो। कई लोग आखरी वचनों की खिचड़ी बना देते हैं। वे समझदारों की आँखों को तो नहीं बाँध सकते पर बेवकूफों की आँखों पर पट्टी बाँध देते हैं। कहते हैं कि स्वामी जी ने तो यह कहा था कि मेरा मत तो सतनाम अनामी का था। यह बिल्कुल ठीक है उनका मत सतनाम अनामी का था। पर उन्होंने यह तो नहीं कहा कि सतनाम अनामी का मत अब है। ब्यास के डेरे को मैं बन्दगी करता हूं कि वे सच्चाई लिखते हैं। पर यह क पाल सिंह ने एक पाप और अन्याय किया। इसका दण्ड उन्हें भोगना पड़ा। उन्होंने लिख रखा है कि स्वामी जी ने यह कहा कि मेरा मत तो सतनाम अनामी का है। 'है' का मतलब है कि मेरा तो अब भी वही मत रहेगा। नहीं यह गलत बात है। उन्होंने सच्ची बात लिखी है और इन्होंने झूठी बात लिखी है।

जो संत की बात का झूठा प्रोपगंडा करता है वह कोढ़ी होकर मरता है या उसको बुरी बीमारी लग जाती है। वह दुःखी होकर ही मरता है। सो ही कहते हैं कि संत की निंदा नहीं करनी चाहिए।

संतों की निंदा करै, मूर्ख काढै खोट।
बिन मारे मर ज्यांगे, पड़ै गजब की चोट।।

स्वामी जी महाराज की वाणी का हुक्के का अंग था। दासी भर कर लाई। पीक दान ले पीक कराई। ब्यास के सार बचन से ये काट दिए हैं। आगरा में है आर्य समाजियों ने इस बात पर बड़ा एतराज किया है कि एक संत की वाणी को काट दिया गया है। यह तो अन्याय है। उसका अर्थ लगाकर दिखाओ। उन्होंने इस बात पर एतराज किया है। सो मुकम्मल सार बचन ज्यों का त्यों तो आगरा से ही मिलता है। संत की वाणी को निकालना भी महापाप है। जैसे संत की टेक को काटकर शब्द में अपना भोगलगा देना, इससे लाखों गौ मार देने जैसा पाप है। सो ही संत की किसी बात को काटना महापाप है। संत किस मंजिल से वे बातें कहते हैं। इसे कौन समझे? सतगुरु की सेवा को दुनिया क्या समझ सकती है? सतगुरु की सेवा को तो गुरुमुख ही जान सकता है। वह मस्ती में आकर पता नहीं क्या लिख देता है। वे गुरुमुख थे। इस बात की पुष्टि करने के लिए आखरी वचन में कहते हैं–भारा सिंह साधु ने पूछा–महाराज जी! एक बात बताओ। जब हम परमाथी बातें पूछें तो किस से पूछें? उनके बहुत चेले बताते हैं। उन्होंने किसी का नाम नहीं लिया। उन्होंने कहा कि सालिगराम से पूछो। जब उन्होंने यह कह दिया कि परमाथी बातें सभी सालिगराम से पूछो। इससे सारी ही बातें सिद्ध हो जाती हैं कि वे गुरुमुख थे और नाम उन्हीं को मिला था। इसी कारण कबीर पन्थी सभी टेढ़े हुए फिरते हैं। कबीर साहब का तो एक गुरुमुख चेला धर्मदास ही था। धर्मदास की प्रणाली का अगर कोई है तो वह राधास्वामी नाम ही जपता हुआ मिलेगा। दूसरा कोई नाम कभी नहीं बताया कबीर साहब ने। कबीर साहब ने यही नाम धर्मदास को बताया था कि तू राधास्वामी नाम को जपा कर। उनकी वाणी मैंने पता नहीं कितनी बार आप लोगों को बताई है। कबीर पंथी अगर कोई हो तो मेरे पास अपनी वाणी को ही लेकर आए। मेरे पास ग्यारह–बारह

उनके बोध सागर हैं। एक कबीर पंथी ने बहुत बड़ी पुस्तक लिखी है। उसने इसका अर्थ लिखा है। एक ने अर्थ लिखा है कि ये राधास्वामी वाले कहते हैं–

कबीर धारा अगम की, यह गलत है। राधास्वामी वाले इसको गलत अर्थ लगाते हैं। वहीं एक कबीर पंथी ने इसका अर्थ लगाया है कि यह सचमुच ही राधास्वामी नाम बनता है।

कबीर धारा अगम की, सतगुरु देई बताय।
ताहिं उलट सुमरन कर, स्वामी संग मिलाय।।

वह टकसाली कबीर पंथी है। बड़ा ही समझदार है। उसकी बड़ी मोटी पुस्तक है। उसमें लिखा है कि इससे राधास्वामी नाम बनता है। असली राधास्वामी नाम यह बनता है। कई इसका अर्थ गलत लगाते हैं। वे कबीर पंथी नहीं हैं।

तो कबीर साहब महाराज ने क्या किया? उनका तो गुरुमुख शिष्य धर्मदास ही था और तो कोई भी गुरु नहीं था और गुरुमुख का इतिहास नहीं मिलता है। उन्होंने कमाल और कमाली को भी बातें नहीं बताई। उन्होंने नाम तो बहुतों को दिया था। उनके अनुयायी राम–नाम का मंत्र भी देते हैं। वे ओहम्–सोहम् का भी देते हैं। 'सोहम्–सोहम्' भी बताते हैं। वे सभी काल के हैं। कई सतनाम का जाप करते हैं। कई सत कबीर का जाप करते हैं। सत कबीर और राधास्वामी एक ही हैं, दो नहीं हैं। पर ये सत कबीर की बातें सुनकर कभी कोई कबीर पंथी लाठ साहब बना फिरै, उसे वह स्थान पूछना चाहिए जहां सत कबीर की धुनि होती है। उसे यह पता पूर्ण गुरु से पूछना होगा कि वह धुनि कहां होती है। धुनि तो 'सोहम्' की भी होती है। धुनि तो 'औहम्' की भी होती है। धुनि तो बहुत होती हैं।

दस प्रकार की धुनि हैं। सो ही उन धुनियों को पूछेगा और उस तरह चलेगा तभी जाकर काम बनेगा। सीखने से काम नहीं

बनेगा। उस वक्त धर्मदास सेठ ने इक्कीस करोड़ रुपया कबीर साहब के चरणों में रख दिया। कबीर साहब ने कहा–धर्मदास ! इनको पुण्य कर दो। मुझे तो जरूरत नहीं है। मैं तो तानी तनता हूं। कबीर साहब तो कहते हैं–

ताना भाई कौन तनेगा, हम राम भजेंगे राम।

उन्होंने तो ताना ही तना। अब वे पुण्य करवा दिए। जब उनके पैसे खत्म हो गए तो धर्मदास ने सोचा कि अब क्या करूं? कबीर साहब ने धर्मदास को कई बार चेताया। वे महलों में ऊंट वाले बनकर गए। वे बांदी बनकर गए। उन्होंने उनको चेताया। सारी बातें तो लम्बी चौड़ी बन जाती हैं। मैं थोड़ी सी ही बताना चाहता था। अब ये फैल गई ज्यादा। अब मैं अगर पूरी नहीं करूंगा तो मेरा दिल दुख पाएगा। पूरी करते समय भी दुख पाता है।

सो कबीर साहब ने उनको पुण्य में लगवा दिया। उन्होंने देखा कि सारा पैसा तो लग चुका। अब तो गंगा में ही डूबकर मरूंगा। जब धर्मदास ने दरिया पर जाकर कूदने की तैयारी की तो कबीर साहब प्रगट हो गए। कबीर साहब ने कहा कि धर्मदास ! क्या करता है। धर्मदास ने कहा–बस ! यही काम करना था। पैसा भी गया और आप भी नहीं मिले। सो मैं डूब कर ही मरना चाहता था। कबीर साहब ने कहा–मैं इसीलिए तो तुम्हारे पास में नहीं आया, क्योंकि तुझे तो पैसे का घमण्ड था। आज तुम्हारा वह घमण्ड टूट गया है। अगर तुम्हें मैं पहले चेला बनाकर शिक्षा देता तो लोग यही कहते कि यह साहूकार के पीछे–पीछे घूमता है। आज तेरे पास कुछ नहीं है और तेरा घमण्ड टूट चुका है। अब तू मेरे पास आ जा। तब कबीर साहब ने उनसे कहा–बोलो। धर्मदास ने कहा कि आज मुझे वह नाम बता दो जिससे मेरा कल्याण हो जाए और मैं फिर इस संसार में न आऊं। जो जिज्ञासु होता है वह कपड़े उतार लेता है गुरु के। ये दोहे मैंने कई बार कहे हुए हैं।

धर्मदास से कहा कबीर साहब ने कि–

औ३म् नाम सब से बड़ा, इससे बड़ा न कोय।
जो इसका सुमरन करे, शुद्ध आत्मा होय।।

धर्मदास ने कहा कि महाराज जी ! आपने तो इसको स्पष्ट कर दिया है। इससे तो आत्मा ही शुद्ध होती है। ओ३म् से मुक्ति नहीं होती है। वह नाम बताओ जिससे मुक्ति हो। ओ३म् छोटी चीज तो नहीं है। यह तीन लोक का कर्त्ता है। बहुत बड़ा है, ओ३म्। पर यह मुक्ति नहीं दे सकता है। कबीर साहब ने कहा है–

ओ३म् नाम रटते रहो, जब तक घट में प्राण।
कबहूं तो दीन दयाल के, भनक पड़ेगी कान।।

धर्मदास ने कहा–मैं उस दीनदयाल को ही पूछना चाहता हूं। जो मैं आपको कह रहा था कि तुम दीन होगे तो वह दयाल हो जाएगा। उन्होंने कहा–मैं तो उस दीन दयाल में ही मिलना चाहता हूं। गुरु जी ! मुझे वह बता दो। तब कबीर साहब ने कहा–

प्रगट कहूं तो मरिहूं, तुर्कानी को जोर।
बात कहूं अगम लोक की, गह कर पकड़ैं चोर।।

कबीर साहब ने कहा–बेटा ! कैसे बताऊं? तुर्कानी का जोर है। ये तो मुझे दुख दे रहे हैं। कभी मुझे ये हाथी से बांध रहे हैं और कभी कुछ सजा देते हैं और कभी कुछ देते हैं। इन मुसलमानों ने और ब्राह्मणों ने ज्यादा सजा दी हैं। सभी के भ्रम दूर करता गया। संत को किसी का भय नहीं होता है। संत तो निर्भय होते हैं। संत भी भय खाएगा तो समझ लो वह संत नहीं हैं। वह तो काल का बच्चा है। संत भी अगर मरते समय यह कहता है कि काल महाराज आ गया है और वह कर्जा मांगता है तो समझो कि यह तो काल का ही बेटा था। इसने काल का कर्जा नहीं चुकाया था। संत तो निर्भय होकर आते हैं और निर्भय हो करके जाते हैं। काल का कर्जा चुका कर आते हैं। काल का कर्ज चुका कर नहीं काल

के देश को उजाड़ने के लिए आते हैं। वे अठाहरवीं मंजिल का नाम देकर उस देश को उजाड़ते हैं। सतलोक से नीचे–नीचे सारे ही काल के नाम हैं। आगे जब चलते हैं तो धुनि का नाम लेते हो। तुम धुनियों के वाकिफकार बनो। अभ्यास करके चलो। यह नाम उसको बताया फिर कहा कि क्या करूं तुर्कानी का जोर है। धर्मदास ने कहा कि आप मुझे पर्दे में ही बता दो। फिर कबीर साहब ने कहा–

ओ३म् नाम कर्त्ता नहीं, इसे कर्ता मत मान।
साचा शब्द कबीर का, तू पर्दे ही में जान।।

जैसे स्वामी जी महाराज ने राय सालिगराम जी को जो बातें कहीं वही कबीर साहब ने धर्मदास जी को बताई। वही बातें मैं आप को मिलाकर बताता हूं। तब धर्मदास जी ने कहा–महाराज ! पर्दे में ही बता दो तो कभी स्वामी जी महाराज ने तो हुजूर महाराज को 'राधास्वामी' का उपदेश दिया था और कबीर साहब ने धर्मदास को राधास्वामी का उपदेश दिया था और किसी को नहीं दिया। उस वक्त कबीर साहब ने कहा–

कबीर धारा अगम की, सतगुरु देई बताय।
ताहिं उलट सुमरन कर, स्वामी संग मिलाय।।

धर्मदास ने कहा–महाराज जी ! अब मैं समझ गया। अब राधास्वामी बना कि नहीं? कबीर साहब ने कहा–धर्मदास अगर तू इसे समझ गया है तो अब–

धर्मदास, तोहे लाख दुहाई। सार भेद बाहर न जाई।।

कुल्ला ठोंक दिया। इसीलिए कौन कहता है कि कबीर साहब इस नाम का प्रेमी और जानकार नहीं था? कबीर साहब ने ही ये नाम प्रगट किया था। पर धर्मदास आगे इसे बता नहीं सके। ये नाम सच्चा और पूरा कबीर साहब ने धर्मदास को दिया था। इसीलिए उसके अनुयायी कोई हो तो बोलो। वह इसी नाम को

जपेगा। इस वक्त पर जलता हुआ चिराग राधास्वामी मत ही है और सारे तो बुझे हुए हैं। दूसरे क्यों बुझे हुए हैं? कबीर और दादू बुझे हुए नहीं वे तो संत थे। पर कई तो मजहब के कीड़े बने हुए हैं। राधास्वामी वाले भी भूले हुए हैं। काफी तो शब्द ही नहीं बता सकते हैं। वे गद्दी के गुरु बन बैठे हैं। करणी के गुरु नहीं हैं। राधास्वामी वाला भी कोई बोलना चाहे तो बोल लो। मैं बेधड़क होकर बातें कहता हूं। मैं संतों का सेवक हूं। आप लोगों का भी सेवक हूं।

सो इतनी ही बातें कहनी थी। भाई संत दुनिया में आते हैं वे तो अपना काम किए करवाये आते हैं। जीवों का काम करवा कर अपने घर चले जाते हैं। स्वामी जी की और कबीर साहब की बातें एक करके मिलाई। दोनों की एक समान मिला दी। यह मेरा सत्संग है। मेरा सत्संग यह है कि कबीर साहब और स्वामी जी दो नहीं थे। स्वामी जी पर अगर कोई लांछन लगाता है तो वह काफर है। वह कमीना है। स्वामी जी कुल मालिक उस घर से आये थे। कबीर साहब ने भी यह कहा था कि–

हम धुर घर के भेदी, लाये हुक्म हजूरी।

अर्थात् मैं धुर घर का भेदी हूं और हजूर का हुक्म लेकर आया हूं।

काशी में हम प्रगट हुए, रामानन्द चिताये।
साहेब का परवाना लेकर, हंस उबारन आये।।

साहब का परवाना यानि चिट्ठी लेकर आया हूं और हंसो को उबारने के लिए आया हूं और मैं जीवों को दुखी देखकर उनको लेने के लिए आया हूं। सुरत सम्वाद है उसे जाकर देखो। वे कहते हैं–ऐ सुरत ! तुम दुखी हुई तभी मैं आया। फिर सुरत कहती है कि तुम फिर काल को बख्श दोगे। तो कहते हैं कि अब नहीं बख्शूंगा। मैं तो दुखी देखकर ही आया हूं राधास्वामी धाम से। अब काल को

रूहें नहीं बख्शूंगा। तू डर मत। अब काल को नहीं दूंगा। यह उनका प्रण था। स्वामी जी ने कहा–जब तक संसार में एक जीव भी रहेगा, तब तक मेरी जहाज किनारे पर रहेगी और भर–भर कर रूहों को तारेगी। सो राधास्वामी नाम तो कुल मालिक का नाम है। इसी नाम से जीवों का सारा काम है। इसी राधास्वामी नाम का सुमरन करने से ही हमारे बंधन टूटते हैं। यह टकसाली नाम है और धुर दरगाह का नाम है। यह नाम सारी दुनिया में क्यों फैल गया है? अमेरीका और अफ्रीका तक कनाडा, जर्मनी, जापान सारे ही देशों में फैल गया है। पाकिस्तान में राधास्वामी नाम के सत्संगी हैं। पिछले दिनों में अखबार आया था। वहां भी सत्संगी हैं। पर वहां और मत तो नहीं है। हम वहां पर जाते हैं। गुरु नानक साहब का प्रचार है औरों का प्रचार नहीं है। स्वामी जी का प्रचार है। इसे उन्होंने कलयुग में जीवों का उद्धार करने के लिये नाम प्रगट किया। पर काल महाराज बाधा डालने वाला है। इस नाम में भी बहुत बाधा डालता है। कहता है कि मैं अपने एजेन्ट खड़े कर दूंगा। इस नाम को आगे नहीं चलने दूंगा। कहते हैं कि जहां बम का गोला चलता है, वहां छोटी मोटी बन्दूकें नहीं रहती हैं। राधास्वामी नाम तो एक बम का गोला है। यह करोड़ों पापों को स्वाहा कर देता है। इसलिये कहते हैंः–

राधास्वामी गाय के जन्म सुफल कर ले।
यही नाम निज नाम है, मन अपने धर ले।।

।। राधास्वामी ।।

मरना क्या है?

महर्षि शिवव्रत लाल जी

दुनिया कहती है मरने से दुख होता है। मगर मेरा अनुभव बिल्कुल इसके विरूद्ध है। मैं मर कर जिया हूं। इसलिये अब मुझे कोई लाख समझाये मैं मरने को आनन्ददायक अवस्था समझता हूं। यह सच है कि अंगड़ाईयां लेनी पड़ती है, हाथ पांव ऐंठते हैं, आंख से आंसू भी जारी हो जाते हैं और कुछ आदमी कराहते भी हैं, मगर यह सब दशायें आनन्द देने वाली हैं। कोई भी यह न समझे कि मरने और जान निकलने के समय पीड़ा या कष्ट होता है।

मर जाने से जग डरै, मेरे मन आनन्द।
कब मरिहौं कब पाइहों, पूरण परमानन्द।।

अभ्यास करने से आप ही आप मृत्यु की मंजिलें जीवन में ही पार करने का अवसर हाथ आ जाता है और जिन लोगों ने एक या दो अन्तरीय स्थान पार कर लिये हैं उनको भी कोई कष्ट अन्तिम समय में न होगा। जिसका जी चाहे मर कर देख लें। हां, जब तक सुरत का खिंचाव तीसरे तिल के स्थान तक नहीं होता, उस समय तक सम्भव है कि संसार की प्रीति, सम्बन्धियों का विछोह और धन दौलत के छूटने का ख्याल सताये मगर यह दशा केवल क्षणमात्र के लिये होती है। आगे चलकर आनन्द ही आनन्द है। हां मन को संयम में करना आवश्यक है।

इस सुरत शब्द योग के साधन कर लेने से जान निकलने का कष्ट अभ्यासी को बिल्कुल न होगा। यह मैं अनुभव कर चुका हूं, समझ गया हूं और अधिकारियों को समझाने बुझाने के लिये तैयार हूं।

अनमोल वचन

आत्मिक ज्ञान रूपी पदार्थ मनुष्य बाहर ढूंढ़ता है और पा नहीं सकता। इसे पाने के लिये इसके भेद के ज्ञाता सतगुरु का मार्ग-दर्शन आवश्यक है। *-कबीर साहब*

पूरे मुर्शिद की तलाश करो, क्योंकि बगैर मुर्शिद के यह रास्ता खतरों से भरा हुआ है। अगर तेरे सिर पर मुर्शिद का हाथ नहीं होगा तो शैतान की आवाज तुझे बहकाकर गुमराह कर देगी। *-मोलाना रूम*

जब तक मन में काम, क्रोध, मद और लोभ रहता है, तब तक ज्ञानी और मूर्ख एक समान होते हैं। *-सन्त तुलसी दास जी*

पूजा के योग्य सर्वप्रथम माता है। पुत्रों को चाहिये कि वह माता की टहल (सेवा) तन, मन, धन से करें। उसे सब प्रकार से प्रसन्न करें। उसका अपमान कदापि न करें। *-दयानन्द सरस्वती*

ज्ञान-सार

दुःख का कारण हम खुद ही होते हैं, दूसरा कोई नहीं। जब तक हम दूसरे को दुःख का कारण मानेंगे, तब तक हमारा दुख मिटेगा नहीं।

अपने सुख से सुखी होने वाले को दुखी होना ही पड़ेगा और दूसरे के सुख से सुखी होने वाले का दुख सदा के लिये मिट जायेगा।

शरीर को 'मैं' और 'मेरा' मानना ही सम्पूर्ण दुखों का कारण है। सुख पाना चाहते हो तो दूसरों को सुख दो। जैसा बीज बोओगे वैसी ही खेती होगी।

दुख आने पर प्रसन्न होना बहुत ऊंचा साधन है।

सत्संग भावांश दादरी 19.8.2005

सन्तमत की पहली शिक्षा यह है कि मनुष्य को अपने हक हलाल की यानि मेहनत की पवित्र कमाई पर निर्वाह करना चाहिए। यदि लोग सन्तों की इसी एक शिक्षा को मान लें, तो सभी का जीवन सुखी हो जाए। निस्सन्देह कई बार सन्तों की शिक्षाएं ऊल जुलूल और चकित करने वाली लगती हैं क्योंकि लोगों की चाहें संसारी होती हैं। वे उनकी बातों को आजमाईश भी करके नहीं देखते हैं। परन्तु यदि कोई उन पर अमल कर लें तो वह इस बात को समझ जाएं कि सन्तों का प्रत्येक वचन उसके जगत और अगत को सुखदाई बनाने वाला होता है।

सन्तों के सत्संगों में ठहरना हरेक के वश की बात नहीं है। बहुत से लोग तो सत्संगों में भी संसारी कार्य व्यवहार करने के लिए ही आते हैं। परन्तु सन्त तो यह कहते हैं कि-

सत्संग के मांह बैठ के, बात चलावै और।
उस पापी जीव को, तीन लोक में नाहिं ठौर।।

सत्संग में आने वाले हर सत्संगी को सत्संग के लिए ही आना चाहिए। सत्संग की हर बात को ध्यान से सुनना चाहिए। यदि वे उसके किसी वचन को अपना कर देखेंगे तो उनको यह अनुभव हो जाएगा कि उसका प्रत्येक वचन उनके भले का, कल्याणकारी और सुखदाई है। हुजूर महाराज जी ने इस बात को होशियारपुर के परम सन्त हुजूर फकीरचन्द जी महाराज का एक उदाहरण देकर स्पष्ट किया।

एक बार होशियारपुर के सन्त बाबा फकीरचन्द जी के पास उनके किसी मजदूर शिष्य ने आकर विनती की कि महाराज जी! मेरी मजदूरी से मेरा गुजारा नहीं चलता है। आप मुझे कोई उपाय बताओ, जिससे मैं आराम से जीवन बिता सकूं। बाबा जी ने पहले तो मजदूर से उसकी मासिक मजदूरी पूछी। इसके बाद में उन्होंने उस मजदूर को कहा कि यदि तू अपनी इस मासिक मजदूरी को कम करवा ले तो तुम्हारा गुजारा ठीक होने लग जाएगा। बाबा जी ने जैसा उस मजदूर को कहा था उसने अपनी मासिक मजदूरी कम करवा ली। जब वह दो तीन मास के पश्चात् हुजूर फकीरचन्द जी महाराज के पास आया तो उन्होंने उस मजदूर से उसका हाल पूछा तो उसने बताया कि महाराज जी मैंने आपके कथनानुसार अपनी मजदूरी कम करवा ली थी। फिर भी मुझे अब कोई आर्थिक कठिनाई नहीं हुई। इस के बाद उन्होंने फिर उसको अपनी मजदूरी के दस रुपये और कम कराने के लिए कहा। मजदूर को बाबा जी पर पूर्ण श्रद्धा थी। अब उसने उसी प्रकार से दस रुपए और भी कम करवा लिए। कुछ मास के बाद जब वह उनके पास आया तो उसने बाबा जी को बताया कि हुजूर, यह एक सचाई है अब मेरा गुजारा पहले से और भी अधिक सुखपूर्वक हो रहा है। उस मजदूर ने बाबा फकीरचन्द जी महाराज को कोई भी गल्त बातें नहीं बताई। निश्चित रूप से उस मजूदर के कम मजदूरी करवाने पर उसका गुजारा और अधिक सुखपूर्वक चला था।

जब मनुष्य अपनी मेहनत से अधिक पैसा लेता है तो उसका वह पैसा किसी बीमारी या किसी अन्य दुख तकलीफ में खर्च होता है और उसके जीवन को अशान्त बनाता है। जो सरकारी कर्मचारी या मजदूर अपनी मेहनत से अधिक पैसा लेते हैं उनका जीवनयापन कष्टपूर्वक चलता है। जो लोग अवैध तरीकों से अनाप-शनाप

पैसा कमाते हैं उनका पैसा चोरी हो जाता है अथवा उनके किसी सामान को आग लग जाती है अथवा बीमारियों में वह धन जाता है और इससे भी अधिक खराब किसी के पास डाके अथवा गिफ्ट आदि का धन आता है तो उनकी स्त्रियों की चेनें तोड़ ली जाती हैं। हक हलाल की कमाई से जीव को अदभुत आन्तरिक सुख की प्राप्ति होती है। हुजूर महाराज जी ने फर्माया कि दूसरों की कमाई हड़पने वालों अथवा बुरा काम करने वालों का जीवन अत्यन्त ही अशान्त रहता है। इसीलिए सन्त हमेशा ही अपने जीवन में प्रत्येक को सचाई बरतने की सलाह देते हैं। वे कहते हैं कि-

जान बूझ साची तजे, करे झूठ से नेह।
उसकी संगत राम जी, सुपनेहू मत देय।।

ध्यानाकर्षण बिन्दू

सभी सत्संगियों को स्मरण कराया जाता है कि प्रत्येक आश्रम से सत्संगियों की दिनोद धाम में सेवा की बारी आती है। अतः आप सभी अपनी-2 शाखा में जाकर अपनी सेवा का समय पूछें और निश्चित समय पर धाम में सेवा तथा दर्शन लाभ उठायें।

सितम्बर/अक्तूबर मास के लिए सेवा कार्यक्रम

1	बनवासा	26 सितम्बर	-	02 अक्तूबर
2	गोहाना	03 अक्तूबर	-	09 अक्तूबर
3	कैथल	10 अक्तूबर	-	16 अक्तूबर
4	इस्माइलपुर	17 अक्तूबर	-	23 अक्तूबर
5	कोसली	24 अक्तूबर	-	30 अक्तूबर

''मैं सूबे सिंह सुपुत्र श्री भूप सिंह, गांव खानक, तह. तोशाम का रहने वाला हूं। मुझ पर जो दया व मेहर मेरे सतगुरु जी महाराज ने की है, मैं उसका वर्णन कर रहा हूं।

दिनांक 23.5.2005, सोमवार को मेरी घरवाली सन्तोष पेट की पीड़ा से परेशान थी। हम लगभग हर सोमवार को सत्संगी भाई शब्द-वाणी करते हैं। उस दिन सोमवार को तीर्थदास जांगड़ा के यहां शब्दवाणी थी। मैं जब सत्संग में शब्दवाणी के लिए जाने को तैयार हुआ तो घरवाली कहने लगी आज आप मत जाओ मुझे शारीरिक परेशानी है। मैंने उसी वक्त संजय क्लीनिक खानक में कार्यरत सुरेश को दवा उपचार के लिए टेलीफोन किया तो सुरेश ने कहा कि आप उन्हें दर्द निवारक गोली दे दो। उससे उन्हें आराम हो जायेगा। मैंने उसी वक्त दर्द निवारक गोली सन्तोष को दे दी और मैं निश्चिंत होकर शब्दवाणी के लिए तीर्थदास के यहां चला गया। लेकिन सतगुरु की मेहर को हम अज्ञानी जीव समझ नहीं सकते हैं कि गुरु महाराज कब कैसे और किस प्रकार जीव को सम्हालते हैं। जब मैं रात एक बजे घर वापिस गया तो मैंने तकलीफ के बारे में घरवाली से पूछा तो उसने कहा, गोली से मुझे कोई आराम नहीं हुआ। मुझे तो इंजैक्शन देने के बाद आराम हुआ। जब मैं दूसरे दिन क्लीनिक में दवाई लेने गया तो सुरेश से मैंने पूछा कि तुम तो कह रहे थे कि गोली से आराम हो जायेगा, तो यह इंजेक्शन आदि के लिए तुमको किसने कहा? सुरेश कम्पाउंडर ने कहा कि मेरे पास आपके लगातार तीन बार रह-2 कर फोन आए और आपने कहा कि उसे आराम नहीं हुआ। उसे सम्भाल कर आओ। जबकि सत्य यह है कि मैं रात एक बजे तक शब्द वाणी

व सत्संग के बीच में से उठकर कहीं गया ही नहीं और ना ही मेरे घर टेलीफोन है तो और मेरे बिना उसको कौन कहां से फोन करता? फिर ना ही मेरे घरवालों को सुरेश कम्पाउंडर के मोबाईल नम्बर का पता था और ना ही तीर्थदास के यहां से किसी ने टेलीफोन किया। यह तो कुल मालिक के रूप में मेरे हुजूर महाराज कंवर जी ने ही मुझ पर वो दया की है हमें यह अचरज हुआ कि जिन्हें हम सिर्फ इंसान समझते हैं वो कोई और नहीं हैं वरन् वे स्वयं कुल मालिक हैं। हम इस सतगुरु कृपा के हुजूर महाराज जी के बड़े आभारी हैं। वो अन्य पर व मुझ गरीब दास पर भी इसी तरह दया करते रहें।''

सूबेसिंह पुत्र श्री भूप सिंह,
गांव/पो. दैयड़, जिला फतेहाबाद,
(वर्तमान खानक में रह रहा हूं)

नोट :-जिस किसी सत्संगी भाई के साथ इस प्रकार सतगुरु दया की घटना घटी हो तो प्रमाण सहित दिनोद धाम में भाई बलबीर सिंह को दे सकते हैं।

आगामी मास के सत्संग

दिनांक	स्थान
2 अक्तूबर, रविवार (जन्म दिन बड़े महाराज जी)	दिनोद
9 अक्तूबर, रविवार	नजफगढ़ (दिल्ली)

सेवादारों के लिए विशेष सूचना

सभी सेवा प्रेमी सत्संगियों तथा विशेष रूप से सभी सेवादारों को **''राधास्वामी संत संदेश''** के माध्यम से सूचित किया जाता है कि **बड़े महाराज जी के जन्म दिन पर सत्संग व भण्डारा दिनांक 2 अक्तूबर, 2005 रविवार को दिनोद में होगा।**

अत: सभी सेवा करने के इच्छुक सत्संगी व सेवादार **दिनांक 30 सितम्बर, शुक्रवार को सायं भिवानी आश्रम में अवश्य पहुंच जायें।**

हमारे सभी ''राधास्वामी संत संदेश'' के सदस्यों से भी प्रार्थना की जाती है कि यह सूचना अपने अधिकत्तम सत्संगियों व विशेष रूप से सेवादारों तक जिस प्रकार भी संभव हो विशेष रूचि लेकर शीघ्रातिशीघ्र पहुंचाने का कष्ट करें क्योंकि सत्संग बहुत निकट है। इसे अति आवश्यक समझें।

।। राधास्वामी।।

सचिव,
राधास्वामी सत्संग (दिनोद), भिवानी

कर्म (कहानी)

एक कहावत है-''कर्मों की ध्वनि विचारों और शब्दों की ध्वनि से ऊंची होती है। इसका आशय यह है कि विचार अपनी जगह पर महत्वपूर्ण है, वचन अपनी जगह पर महत्वपूर्ण है, पर इन दोनों से अधिक महत्वपूर्ण है-कर्म। क्योंकि विचारों और शब्दों की सार्थकता कर्म में ही है। मानव के लिये कर्म आवश्यक है। कर्म से हम बच नहीं सकते। गीता में फल की आकांक्षा को छोड़कर निरन्तर कर्म करने के लिये कहा गया है।

मनुष्यों के कर्मों की रचना भगवान नहीं करते, इस कथन का भाव है कि अमूक शुभ या अशुभ कर्म अमुक मनुष्य को करना पड़ेगा, ऐसी रचना भगवान नहीं करते, क्योंकि ऐसी रचना यदि भगवान कर दें तो विधि-विशेधशास्त्र ही व्यर्थ हो जाये, कर्मफल के संयोग की रचना भी भगवान नहीं करते। कर्मों के साथ सम्बन्ध मनुष्यों का ही अज्ञानवश जोड़ा हुआ है। कोई तो आसक्तिवश उनका कर्ता बनकर और कोई कर्मफल में आसक्त होकर अपना सम्बन्ध कर्मों के साथ जोड़ लेते हैं।

यदि इन तीनों की रचना भगवान् की की हुई होती तो मनुष्य कर्म बन्धन से छूट ही नहीं सकता। उसके उद्धार का कोई उपाय ही नहीं रह जाता।

यहां यह शंका होती है कि यदि वास्तव में मनुष्यों का, परमेश्वर का कर्मों से और उनके फल से सम्बन्ध नहीं है तो फिर संसार में जो मनुष्य यह समझते हैं कि अमुक कर्म मैंने किया है, यह मेरा कर्म है, मुझे इसका फल मिलेगा। इसी शंका का निराकरण करने के लिये कहते हैं कि अनादि सिद्ध अज्ञान द्वारा सब जीवों का यथार्थ ज्ञान ढका हुआ है। इसलिये वे अपने और परमेश्वर के स्वरूप को तथा कर्म के तत्व को न जानने के कारण अपने में और ईश्वर में कर्ता कर्म और कर्मफल के सम्बन्ध की कल्पना करके मोहित हो रहे हैं।

स्वर्ग और नरक (कहानी)

एक महात्मा ने बहुत तपस्या की। जब भगवान प्रकट हुए तो उन्होंने पूछा-तेरी इच्छा क्या है? साधु ने कहा-'स्वर्ग नरक के दर्शन' भगवान ने धर्मराज के हरकारे को हुकम दिया कि स्वामी जी को स्वर्ग-नरक दिखाकर लाओ।

वह साधु को पहले नरक में ले गया। वहां क्या देखा कि खाना परोसा हुआ था लेकिन नरक वासियों के कुहनी के जोड़ सीधे अकड़े हुए थे। बाहें मोड़ नहीं सकते थे। बिना बाजू मोड़े खाना मुंह में कैसे लें। सब भूखे बैठे भगवान को गाली दे रहे थे तथा आपस में लड़ रहे थे।

अब हरकारा उनको स्वर्ग में ले गया। वहां भी खाना लगा हुआ था परन्तु उनकी बाहें भी वैसी ही सीधी थी। उन्होंने एक तरकीब निकाली। एक ने खाना उठाया दूसरे के मुंह में दे दिया। दूसरे ने उसके मुंह में दे दिया। सबका आराम से पेट भर गया। वह धर्म चर्चा कर रहे थे।

दोनों जगह देखकर साधू भगवान के सामने आया तो भगवान ने पूछा-आपने क्या देखा तथा क्या समझा। महाराज ने दोनों जगहों का हाल सुना दिया तथा कहने लगे कि उनको कोई रहस्य समझ में नहीं आया।

भगवान ने कहा कि बस यही समझने की बात है। जहां सब लोग एक दूसरे के लिये जीते हैं, वह स्वर्ग है। जहां अपनी-अपनी पड़ी हुई है, वह नरक है।

जीना उसका है जो औरों के लिये जीता है।
वैसे तो सभी आते हैं, आके चले जाते हैं।।